आर्य समाज व राष्ट्र विकास

अशोक कुमार
Lect. in History M.A. , NET (History)
G.SSS Gudhan, Rohtak (Haryana)

शोध–आलेख सारः–

आर्य समाज आन्दोलन का प्रसार प्रायः पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। स्वामी दयानन्द और उनके गुरू स्वामी विरजानन्द दोनो ही शुद्ध वैदिक परम्परा में विश्वास करते थे । वेदों में वर्णित मूल्यों[1] को छोड़कर उन्होंने सभी बातों व विचारों को अन्धविश्वास व पाखण्डों की संज्ञा दी। आर्य समाज की स्थापना के पीछे भी स्वामी दयानन्द सरस्वती का मूल उद्देश्य प्राचीन वैदिक ज्ञान के माध्यम से भारतीय सभ्यता व संस्कृति का विकास करना तथा समाज व हिन्दू धर्म में फैली कुरीतियों को दूर करना था। आर्य समाज ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास में भी अपनी अहम भूमिका निभाई और आर्य समाज के संदेशों द्वारा भारतीय जनता में 'स्वराज' तथा निज देश की भावना घर कर गई और लोग जोश से भरकर राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े । भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास तथा प्रचार , प्रसार के लिए तो आर्य समाज सदैव अग्रणी रहा हैं।

मूल शब्दः–

आर्य समाज , पाश्चात्य सभ्यता , वैदिक परम्परा , अंधविश्वास , भारतीय सभ्यता , संस्कृति ,राष्ट्रीय आन्दोलन , कुरीतियां।

भूमिकाः–

आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन् 1875 ई0 में बम्बई[2] में की जिसका मुख्य उद्देश्य प्राचीन वैदिक धर्म की शुद्ध रूप से पुनः स्थापना करना था। जो झूठे धार्मिक विश्वास तथा सामाजिक कुरीतियां कालांतर में हिन्दू धर्म में आ गई थी उन्हें उन्होंने जड़ से उखाड़ फैकने का प्रण किया । 1877 में ''आर्य समाज ,लाहौर[3]'' की स्थापना हुई जिसके उपरांत आर्य समाज का प्रचार कार्य और भी तेज हो गया । स्वामी दयानन्द का उद्देश्य था कि भारत को धार्मिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय रूप से एक कर दिया जाए। उनकी इच्छा थी कि आर्य धर्म ही सम्पूर्ण देश का धर्म हो और भारतीय सभ्यता व संस्कृति का विकास केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व व्यापी हो । अपने इस उद्देश्य को फलीभूत करने के लिए स्वामी दयानन्द आर्य समाज के मंच से जीवन पर्यन्त प्रयास करते रहें। उनके प्रयास के कारण सम्पूर्ण हिन्दू जगत सदैव के लिए उनका ऋणी रहेगा।

शोध –प्रविधि–

प्रस्तुत शोध–पत्र ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। शोध सामग्री को प्रस्तुत पुस्तकों से संकलित किया गया हैं। और आनुभाविक दृष्टिकोण के द्वारा शोध कार्य को गति देने का प्रयास हुआ हैं। वस्तुतः यह शोध पत्र द्वितियक स्त्रोतों से उपलब्ध अध्ययन सामग्री पर आधारित हैं।

शोध के उद्देश्यः–

इस शोध पत्र को निम्न उद्देश्यों के सन्दर्भ में लिखा गया हैं।

. भारतीय सभ्यता व संस्कृति के विकास में आर्य समाज की भूमिका का आंकलन करना।
. आर्य समाज का हिन्दू धर्म के उत्थान में योगदान को समझना।
. स्वामी दयानन्द के सिद्धांतों से अवगत कराना।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म

का 1824[4] ई0 गुजरात की मौरवी रियासत के एक रूढ़िवादी ब्राहम्ण परिवार में हुआ। इनके बचपन का नाम मूल शंकर था। उनके पिता वेदों के महान विद्वान थे , उन्होंने उन्हें वैदिक वाड्मय ,न्याय दर्शन इत्यादि पढ़ाया । दयानन्द की जिज्ञासा ने उन्हें योगाभ्यास इत्यादि करने पर बाध्य किया तथा उन्होंने गृह त्याग दिया । 15 वर्ष जगह–जगह घूमने के बाद 1860 ई0 में वे मथुरा पहुंचे और स्वामी विरजानन्द[5] जी से वेदों के शुद्ध अर्थ तथा वैदिक धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा प्राप्त की । 1863 में उन्होंने झूठे धर्मों का खण्डन करने के लिए''पाखण्ड खण्डनी पताका[6]'' लहराई । 1875 में उन्होंने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की और वैदिक धर्म व भारतीय संस्कृति की रक्षा करना अपना उद्देश्य बना लिया । उन्होंने समकालीन हिन्दू धर्म तथा समाज में फैली अनेक त्रुटिया देखने को मिली । उन्होंने इन दोनों क्षेत्रों में जीवन पर्यन्त अनथक कार्य किया ।

धार्मिक क्षेत्र में आर्य समाज अवतारवाद , मूर्ति पूजा , बहुदेववाद ,पशुबली , श्राद्ध तथा झूठे आडम्बरों में विश्वास नहीं करता था। वह वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानता था तथा उपनिषद काल तक के साहित्य को स्वीकार करते थे। आर्य समाज के अनुसार प्रकृति सत् हैं , आत्मा सत् तथा चित हैं और परमात्मा सत् चित और आनन्द हैं। ये तीनों की अनादि तथा अनन्त हैं उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को आर्य धर्म या मानव धर्म के अनुसार जीवन यापन करके मोक्ष की प्राप्ति करनी चाहिए। वह मानव के कर्मशील होने पर बल देता हैं न कि भाग्य के भरोसे बैठे रहने पर ।

आर्य समाज ने ब्राहम्ण , पुरोहित वर्ग के धार्मिक तथा सामाजिक पक्ष में सर्वोचत्ता के दावे को नहीं माना । आर्य समाज के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को वेद पढ़ने का अधिकार हैं[7]जन्म के आधार पर सभी व्यक्ति समान हैं । सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने छुआछूत , जन्मजात जाति , बाल विवाह तथा अन्य बुराईयों पर कुठाराघाट किया । भारत के सामाजिक इतिहास में आर्य समाज ने पहली बार शुद्ध तथा स्त्री को वेद पढ़ने , ऊँची शिक्षा प्राप्त करने , यज्ञ करने तथा ऊंची जाति के पुरूषों के बराबर के अधिकार प्राप्त करने के लिए आन्दोलन किया ।

आर्य समाज ने स्त्रियों की स्थिति सुधारने के लिए सर्वाधिक प्रयास किया । महिलाओं से संबंधित प्रत्येक बुराई–बाल विवाह,विधवा को हेय मानना , पर्दा प्रथा , दहेज पर्था , बहु विवाह , वेश्यागमन , देवदासियां इत्यादि का विरोध किया। वे वर्ण व्यवस्था जन्म से नहीं बल्कि कर्म से मानते थे। उनके अनुसार केवल व्यवसाय के आधार पर कोई व्यक्ति ब्राहमण , क्षत्रिय , वैश्य व शुद्र हो सकता हैं परन्तु इन चारों वर्णों में कोई भी घृणित या अश्पृथ्य नहीं हैं। भारतीय संविधान में अश्पृथ्यता का अंत तथा स्त्री को पुरूष के बराबर अधिकार आर्य समाज के उपदेशों के कारण वर्णित हैं।

आर्य समाज ने हिन्दू धर्म में फैली अनेक आडम्बरों , कर्मकाण्डों , जादू–टोना , झाड़–फूक , कुरितियां व झूठे विश्वासों का खण्डन किया तथा बताया की मानव सेवा सबसे बड़ा धर्म हैं और कहा कि हमें तर्क के आधार पर विवेकापूर्ण जीवन जीना चाहिए। यद्यपि इस आन्दोलन का बाह्य स्वरूप वैदिक परम्पराओं की पुनः स्थापना करता था परन्तु वस्तुतः आर्य समाज ने आधुनिक ज्ञान तथा तर्क को अपनाया।

आर्य समाज के कार्य का सबसे अधिक प्रभाव शिक्षा सामाजिक आधार तथा सेवा के क्षेत्र में देखने को मिलता हैं। उनके अनुयायियों ने विद्या के प्रसार तथा अन्धकार को समाप्त करने में विशेष योगदान दिया। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से 1886 में आरम्भ की गई D.A.V संस्थाएं शीघ्र ही देश के कोने–कोने में फैल गई[8]। आर्यसमाज रूढ़िवादी तथा प्रतिक्रियावादी नहीं था इसलिए अंग्रेजी भाषा तथा पाश्चात्य ज्ञात का सर्वोत्तम समन्वय इनमें मिलता हैं। गुरूकुलों के माध्यम से आर्य समाज ने भारतीय प्राचीन वैदिक पद्धती को अभी तक जीवित रखे हुए हैं।

आर्य समाज के सिद्धांत सर्वप्रथम बम्बई में गठित किए गए थे। बाद में लाहौर में 1977 में पुनः सम्पादित किया गया जो इस प्रकार हैं:–

1. विद्या सत्य हैं तथा विद्या का आदि मूल परमेश्वर हैं।
2. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। वेदे को पढ़ाना तथा सुनना सभी आर्यो का परम धर्म हैं।
3. सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
4. सब कार्य तर्क के आधार पर धर्मानुसार करने चाहिए।
5. संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य हैं।
6. सबसे प्रीतिपूर्वक , यथानुसार , धर्मयोग्य व्यवहार करना चाहिए।
7. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
8. प्रत्येक को अपनी उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए तथा सभी को उन्नति को अपनी उन्नति समझना चाहिए।
9. सभी मनुष्य प्रत्येक हितकारी नियम में स्वतन्त्र हैं।
10. ईश्वर निराकार तथा सर्वशक्तिशाली हैं।

आर्य समाज ने शुद्धि आन्दोलन[10] भी आरम्भ किया जिसका उद्देश्य,जो लोग हिन्दू धर्म में फैली कुरीतियों के कारण दूसरे धर्म में चले गए थे , उनको हिन्दू धर्म में वापिस लाना था इसके अतिरिक्त लगभग 60000 मलकाने राजपूतों को और उन हिन्दूओं को जिनको मोपला[9] विद्रोह (1923) तथा भारत विभाजन (1947) के समय बलपूर्वक मुस्लमान बना लिया था , उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में लौटने का अवसर दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम 'स्वराज' शब्द का प्रयोग किया था और कहां था कि 'बुरे से बुरा देशी शासन, अच्छे से अच्छे विदेशी शासन से बेहतर होता हैं।''आर्य समाज की शिक्षा के फलस्वरूप उनके अनुयायियों में स्वदेशी तथा देश भक्ति की भावना कूट–कूट कर भरी थी।

अतः आर्य समाज ने स्वदेशी और निज देश का नारा देकर स्वदेशी वस्तुओं के प्रति भारतीयों की रूचि बढ़ाई, जिससे देशा का आर्थिक विकास हुआ ,समाज में फैली अनेक कुरीतियों को दूर किया, जिससे सामाजिक विकास हुआ , भारतीय आर्य वैदिक संस्कृति को विश्व में सर्वश्रेष्ठ बताया,जिससे भारत के सांस्कृतिक गौरव का विकास हुआ तथा 'स्वराज' शब्द का प्रयोग सबसे पहले करके भारत के राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन में नई जान फूँकी। इस प्रकार आर्य समाज ने भारत के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया और कांग्रेस में अनेक नेता जैसे बाल गंगाधर तिलक , अरविन्द घोष , सुभाषचन्द्र बोस , विपिन चन्द्रपाल आदि आर्य समाज के सिद्धांतों से प्रभावित थे और इनकी विचारधारा और कार्य प्रणाली पर आर्य समाज की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं।

संदर्भ सूचिः–

1. Gandhi on Pluralism and Communalism: P.L. John Panicker.2006, Page-39
2. स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती , सतीश सी0 भटनागर–2014 ,Page-65
3. History Modern India ,S.N. Sen , Page -126
4. Recent Philosophies of Education in India , Sarayu Prasad Chaube - 2005 , Page-26

5. Hindu-Muslim Relations in Brithish India : A Study of Controversy …….., Gene R. Thursby -1975, Page -10
6. World Prespectives on Swami Dayananda Saraswati , Ganga Ram Garg -1984 , Page -20
7. Longman History & Civics ICSE 8 , Singh Vipul , Page – 54
8. The Arya Samaj Movement in South Africa , Thillayvel Naido -1992 , Page-34
9. Reading Subaltern Studies: Critical History , Contested Meaning ………., David Ludden , Page -32
10. Hindu Nationalism and the language of Poliltices in Late Colonial India Page -154